

मुकदमों का विवरण

मार्कस जाजारा बनाम.

असम और ए. एन. आर. का राज्य (2023 की आपराधिक अपील No.3405) नवंबर 03,2023

[सूर्या कान्ट और दीपांकर दत्ता, जे. जे.] हेडनोट्स

विचार के लिए विषय:अपीलार्थी को अपने दामाद की हत्या करने का दोषी ठहराया गया था। क्या अपीलार्थी को जिम्मेदार ठहराया गया अपराध भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 300 के अपवाद I के दायरे में आता है जो "हत्या" की अवहेलना करता है।

दंड संहिता, **1860 -s.302** और **s** का अपवाद **II.300** भारतीय दंड संहिता सी.- घटना अपीलार्थी के घर के अंदर हुई-सूचना देने वाला अपीलार्थी के घर गया था और अपने भाई को, जो अपने ससुराल वालों के साथ रह रहा था, मृत पाया था-साक्ष्य पर विचार करने पर विचारण न्यायालय ने अपीलार्थी को अपराध करने का दोषी ठहराया।**302** भारतीय दंड संहिता सी. और परिणामस्वरूप, उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई-अपील को उच्च न्यायालय द्वारा खारिज कर दिया गया-स्वामित्व:

आयोजित किया गया:अपीलार्थी का सबसे अच्छा उद्देश्य मृतक को शराब पीने के बाद अपनी बेटी के साथ दुर्व्यवहार करने से रोकना था-जिस तरह से यह घटना घर के अंदर हुई प्रतीत होती है, वह इंगित करता है कि अपीलार्थी ने लगातार उकसावे के कारण अपना आत्म-नियंत्रण खो दिया और अचानक अपने दामाद को बांस की छड़ी से पीटा-यह एक ऐसा मामला है जहां मृतक के अपीलार्थी के घर में स्थानांतरित होने के बाद से उकसावा पनप रहा है-इसने अपीलार्थी की बेटी के अपमानजनक रुख की प्रत्येक पुनरावृत्ति के साथ भारी गंभीरता हासिल की-घातक घटना आत्म-नियंत्रण की शक्ति के नुकसान की अंतिम परिणति प्रतीत होती थी-एक हताश और असहाय व्यक्ति का उबलता हुआ असंतोष।

834

मार्कस जाजारा बनाम असम और ए. एन. आर. का राज्य।

निरंतर उकसावा-वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में, यह प्रतीत होता है कि मृतक को चोट पहुँचाने में अपीलार्थी का कार्य 'गैर इरादतन हत्या' की अभिव्यक्ति के भीतर आता है जो 'हत्या' के बराबर नहीं है-इस न्यायालय की विचारशील राय में, अपीलार्थी को दी गई आजीवन कारावास की सजा को दस साल के कठोर कारावास में परिवर्तित करके न्याय के उद्देश्यों को पर्याप्त रूप से पूरा किया जाएगा-नीचे दी गई अदालतों द्वारा दी गई सजा तदनुसार संशोधित है।[पारस 17,18,19]

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन आक्षेपित हैं

आपराधिक अपीलीय अधिकारिता :2023 की आपराधिक अपील No.3405।

2016 के सी. आर. एल. ए. जे. No.118 में गुवाहाटी उच्च न्यायालय के दिनांकित 12.03.2019 निर्णय और आदेश से।

रूप:

गौरव अग्रवाल, अपीलार्थी के अधिवक्ता।

नलिन कोहली, सीनियर ए. ए. जी., आस्तिक ढींगरा, अंशुल मलिक, शुभदीप राँय, अधिवक्ता।उत्तरदाताओं के लिए।

सर्वोच्च निर्णय के निर्णय का निर्णय/आदेश

1. अनुमति दी गई।

2. गुवाहाटी उच्च न्यायालय ने ज्ञात सत्र न्यायाधीश, जोरहाट द्वारा पारित निर्णय और दिनांक 1 के आदेश के खिलाफ अपीलार्थी द्वारा प्रस्तुत दिनांक 4 के आक्षेपित निर्णय के माध्यम से जेल अपील को खारिज कर दिया है, जिसमें अपीलार्थी को अपने दामाद, स्वर्गीय मार्कुश बोर्जा की हत्या करने का दोषी ठहराया गया था और टीटाबार पी. एस. मामले 2 से उत्पन्न सत्र मामले 3 (जे. टी.)/2015 में प्रति राशि के भुगतान में चूक पर छह महीने के निर्धारित कारावास के साथ 5,000 रुपये के आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी।

3. उपर्युक्त एफ. आई. आर., भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 307 के अंतर्गत, पी. डब्ल्यू. 8 (वेल बोरजा) द्वारा उसी दिन जमा की गई एक इजहार की प्राप्ति पर दर्ज की गई थी।

836

/

[2023] 14 एस सी आर।

इस आशय का कि उनके छोटे भाई-मार्कुश बोर्जा पर अपीलार्थी ने बांस की छड़ी से हमला किया था और उनकी हत्या कर दी थी।यह घटना अपीलार्थी के घर के अंदर हुई।सूचना देने वाला अपीलार्थी के घर गया और उसने अपने भाई को, जो पिछले साढ़े तीन महीने से अपने ससुराल वालों के साथ रह रहा था, मृत पाया।

4. एफ. आई. आर. दर्ज होने के बाद, अपीलार्थी को गिरफ्तार कर लिया गया और उसके खिलाफ भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 307 के अंतर्गत आरोप पत्र दायर किया गया। अभियोजन पक्ष ने अपीलार्थी की पत्नी-मोनोनित जाजारा (पीडब्लू. 5) और उनकी बेटी-सरनी बोरिया (पीडब्लू. 6) सहित नौ गवाहों से पूछताछ की।अपीलार्थी की पत्नी ने अभियोजन पक्ष के मामले का इस हद तक समर्थन किया कि अपीलार्थी ने उनके दामाद की हत्या कर दी।

हालाँकि, उसने इस घटना को नहीं देखा क्योंकि वह डर के कारण घर में प्रवेश नहीं कर सकी। अपीलार्थी की बेटी, जो मृतक (पीडब्लू. 6) की पत्नी है, के बयान का इस अपील के भाग्य पर प्रत्यक्ष और भौतिक प्रभाव पड़ता है। इसलिए, हम उनके बयान को विस्तार से दोहराने का प्रस्ताव करते हैं, जो नीचे दिया गया है:

“मैं आरोपी श्री मरकाश जाजारा को जानता हूँ जो आज न्यायालय के कठघरे में मौजूद है। आरोपी मेरे पिता हैं।

मैं मृतक मार्कुश बोरा को भी जानता था जो मेरे पति थे।

यह घटना लगभग डेढ़ साल पहले की है। घटना के दिन मैं अपने पति के साथ अपने माता-पिता के घर की ओर बढ़ा क्योंकि वे बीमारी से दम तोड़ रहे थे।

घटना के दिन मैं अपने कार्यस्थल पर मौजूद था। जब मैं शाम करीब 4 बजे घर लौटा तो मुझे पता चला कि मेरे पति की हत्या मेरे पिता [आरोपी] ने कर दी थी।

डर के मारे मैं घर में नहीं घुसा। जब पुलिस हमारे घर पहुंची तभी मैं अपने घर में घुसा। मैंने देखा कि मेरे पति का शव घर की रसोई में पड़ा हुआ है।

मैंने अपने पिता से घटना के बारे में पूछताछ की और उन्होंने मेरे सामने कबूल किया कि उन्होंने मेरे पति की हत्या की थी। पुलिस मेरे पति के शव को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल ले गई। मेरे पिता को भी पुलिस स्टेशन ले जाया गया।

837

मार्कस जाजारा बनाम असम और ए. एन. आर. का राज्य।

क्रॉस-परीक्षा: खुद को पकड़े जाने पर मुझे घटना के बारे में कुछ नहीं पता है। मैंने इस घटना को नहीं देखा।

हम अपने माता-पिता से अलग रहते हैं। मेरे माता-पिता मेरे भाई और उसकी पत्नी के साथ रहते थे।

मेरे पति एक शराबी व्यक्ति थे। घटना की तारीख से पहले मेरे पति शराब पीने के बाद मेरे साथ-साथ मेरे पिता से भी झगड़ा करते थे।

मेरे पिता ने मेरे पति की हत्या कर दी क्योंकि वह शराब पीने के बाद मेरे साथ दुर्व्यवहार करता था। मेरे पिता ने मेरे सामने कबूल किया कि उन्होंने मेरे पति की बांस के टुकड़े से हत्या की थी। "

5. अभियोजन पक्ष द्वारा जांचे गए अन्य भौतिक गवाहों में पी. डब्ल्यू. 8 (वेल बोर्जा) शामिल हैं-मृतक का भाई, जो निश्चित रूप से एक चश्मदीद गवाह भी नहीं है। यह जानने के बाद कि उसके भाई पर अपीलार्थी द्वारा हमला किया गया था, वह घटना स्थल पर पहुंचा और अपने छोटे भाई को छत पर मृत पड़ा देखा।

6. इस स्तर पर यह भी उल्लेख किया जा सकता है कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के अनुसार, मृतक को निम्नलिखित चोटें आईं:

“1. दाहिने माथे पर 7 से. मी. x 1 से. मी. x मांसपेशियों के आकार का घाव, मध्य रेखा से 3 से. मी. और भौंह से ढाई से. मी. ऊपर होता है।

2. बाएं मास्टॉइड क्षेत्र पर 2 सेमी x 1 सेमी x मांसपेशियों के आकार का घाव होता है।

3. 2 से. मी. x 1 से. मी. x मांसपेशियों के आकार का घाव ठोड़ी के ठीक नीचे मौजूद होता है और तिरछे रूप से रखा जाता है। ”

7. डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, जिन्होंने शव का शव परीक्षण किया, ने पी. डब्ल्यू. 4 के रूप में गवाह बॉक्स में प्रवेश किया और उनके द्वारा तैयार की गई पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट को स्वीकार करते हुए कहा कि "मृतक द्वारा सिर पर लगी चोट घातक है जिससे तत्काल मृत्यु हो सकती है। ”

8. विचारण न्यायालय ने उपरोक्त साक्ष्य पर विचार करने पर अपीलार्थी को भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 302 के अंतर्गत अपराध करने का दोषी ठहराया और परिणामस्वरूप उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

838

/

[2023] 14 एस सी आर।

9. ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी खराब वित्तीय स्थितियों के कारण, अपीलार्थी की अपील को जेल अधिकारियों द्वारा आगे बढ़ाया गया था और एक न्याय मित्र की सक्षम सहायता से, उच्च न्यायालय पूरे साक्ष्य के पुनर्मूल्यांकन पर निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचा:

“14. उन तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, जो गवाहों द्वारा अच्छी तरह से समर्थित हैं, हम विद्वान न्यायमित्र की इस दलील से असहमत हैं कि अभियुक्त अपीलार्थी की दोषसिद्धि केवल संदेह पर आधारित थी। हम विद्वान वकील के इस कथन से भी असहमत हैं कि "स्वीकारोक्ति" के शब्द को अभियुक्त के सटीक शब्दों में दर्ज किया जाना चाहिए, विशेष रूप से जब यह अतिरिक्त न्यायिक स्वीकारोक्ति हो। (2007) 12 धारा 341 में रिपोर्ट किए गए महाराष्ट्र राज्य के मामले में पारित माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के पैरा 8 में कहा गया है कि हालांकि यह आवश्यक नहीं है कि गवाह को सटीक शब्द बोलने चाहिए, लेकिन इसमें महत्वपूर्ण और भौतिक अंतर नहीं हो सकता है। यह वाक्य दर्शाता है कि यह आवश्यक नहीं है कि गवाह को कबूल करने वाले आरोपी द्वारा बोले गए सटीक शब्द देने चाहिए, लेकिन यह पर्याप्त होगा यदि गवाह द्वारा स्वीकारोक्ति के सामग्री और महत्वपूर्ण भागों को कहा गया है। इस मामले में, तथ्यों और परिस्थितियों के अंतर्गत, यह तथ्य कि पीडब्लू-6 ने अपने बयान में कहा है कि उसके पिता ने उसके सामने कबूल किया है कि जब

उसने उससे पूछताछ की तो उसने उसके पति की हत्या कर दी थी, यह पर्याप्त है क्योंकि यह स्पष्ट, स्पष्ट सी, स्पष्ट और भरोसेमंद है। "

10. अपीलार्थी द्वारा बचाव पक्ष की याचिका के संबंध में कि घटना का कोई चश्मदीद गवाह नहीं था और उसकी बेटी (पी. डब्ल्यू. 6) के समक्ष उसके द्वारा किए गए कथित स्वीकारोक्ति पर भरोसा नहीं किया जा सकता था, उच्च न्यायालय ने उन दलीलों में कोई योग्यता नहीं पाई और राय दी कि:

17. इसके अलावा, पीडब्लू-6 (आरोपी की बेटी) ने कहा कि "मैंने अपने पिता से घटना के बारे में पूछताछ की और उन्होंने मेरे सामने कबूल किया कि उन्होंने मेरे पति की हत्या की थी" और पीडब्लू-1 ने कहा कि "आरोपी ने ग्रामीणों के सामने कबूल किया कि उसने बांस की लाठी की मदद से अपने दामाद की हत्या की थी। दोनों गवाहों के बयान सरल, स्पष्ट और स्पष्ट हैं और उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि आरोपी अपीलार्थी ने स्वीकार किया था कि उसने मृतक पीड़ित की हत्या की थी। यह सच है कि सटीक 839

मार्कस जाजारा बनाम असम और ए. एन. आर. का राज्य।

अभियुक्त अपीलार्थी के शब्द दोनों गवाहों द्वारा नहीं बताए गए थे, लेकिन अभियुक्त द्वारा बताए गए तथ्य के भौतिक सार को व्यक्त कर दिया गया है। इसके अलावा, बचाव पक्ष ने दोनों गवाहों से पूछताछ नहीं की और न ही उनके बयान का खंडन प्रश्न ने या उन्हें बदनाम प्रश्न ने की कोशिश की। इस प्रकार, हमें गवाहों के बयान पर विश्वास न करने का कोई कारण नहीं है।

इसके अलावा, दो गवाहों द्वारा बताए गए अभियुक्त के इकबालिया बयान को परिस्थितिजन्य साक्ष्य से अच्छी तरह से समर्थन मिलता है कि घटना स्वयं अभियुक्त-अपीलार्थी के घर के परिसर में हुई थी और आरोपी-अपीलार्थी घटना के समय पीड़ित के शव के साथ अकेला था।

11. हमने अपीलार्थी की ओर से पेश हुए विद्वान वकील श्री गौरव अग्रवाल के साथ-साथ असम राज्य के विद्वान वरिष्ठ अतिरिक्त महाधिवक्ता श्री नलिन कोहली को सुना है और अभिलेख पर रखी गई सामग्री का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया है।

12. विचार के लिए जो संक्षिप्त प्रश्न उत्पन्न होता है वह यह है कि क्या अपीलार्थी को जिम्मेदार ठहराया गया अपराध भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 300 के अपवाद I के दायरे में आता है जो "हत्या" की अवहेलना करता है। अपवाद मैं इस प्रकार पढ़ता हूँ: "अपवाद 1.—जब गैर-इरादतन हत्या हत्या नहीं है।— दंडनीय हत्या हत्या नहीं है यदि गंभीर और अचानक उकसावे से आत्म-नियंत्रण की शक्ति से वंचित होने के बावजूद, उकसाने वाले व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनता है या गलती या दुर्घटना से किसी अन्य व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनता है।

उपरोक्त अपवाद निम्नलिखित प्रावधानों के अधीन है:— सबसे पहले।—कि उकसावे की मांग या स्वेच्छा से किसी भी व्यक्ति को मारने या नुकसान पहुंचाने के बहाने के रूप में उकसाया नहीं जाता है।

दूसरा।—कि विधि के पालन में की गई किसी भी चीज़ या ऐसे लोक सेवक की शक्तियों के वैध प्रयोग में किसी लोक सेवक द्वारा उकसावा नहीं दिया जाता है।

तीसरी बात।—कि उकसावा निजी रक्षा के अधिकार के वैध प्रयोग में की गई किसी भी चीज़ द्वारा नहीं दिया जाता है।

840

/

[2023] 14 एस सी आर।

स्पष्टीकरण .—क्या उकसावा गंभीर था और अचानक हत्या को रोकने के लिए पर्याप्त था, यह तथ्य का प्रश्न है। "

13. हमें अपीलार्थी की बेटी पी. डब्ल्यू. 6 (सरनी बोरिया) के बयान के संदर्भ में उपरोक्त मुद्दे का विश्लेषण करना चाहिए, जैसा कि पैरा 5 में पुनः प्रस्तुत किया गया है।

14. यह देखा जा सकता है कि निचली अदालत के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने अपीलार्थी की बेटी-सरनी बोरिया (पी. डब्ल्यू. 6) के बयान पर बहुत अधिक भरोसा किया है ताकि उसे मुख्य रूप से अपनी बेटी के सामने किए गए उसके कथित कबूलनामे को देखते हुए अपने दामाद की हत्या का दोषी ठहराया जा सके। 15. हमारे सुविचारित विचार में, पी. डब्ल्यू. 6-सरनी बोरिया के कथन की पूरी तरह से सराहना की जानी चाहिए। उसकी जिरह में, पी. डब्ल्यू. 6 ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि उसका पति एक शराबी था और वह शराब पीने के बाद उसके साथ और अपीलार्थी के साथ भी झगड़ा करता था। उसने स्पष्ट रूप से कहा है कि मृतक शराब पीने के बाद उसके साथ बुरा व्यवहार करता था। 16. पी. डब्ल्यू. 6 के संस्करण से हमें ऐसा लगता है कि मृतक एक शराबी था और वह न केवल अपनी पत्नी के साथ बल्कि उसके परिवार के सदस्यों के साथ भी दुर्व्यवहार करता था। यह संस्करण अपने सही परिप्रेक्ष्य में प्रशंसा का पात्र है। मृतक का ऐसा आचरण होने के कारण, अपीलार्थी की एकमात्र चिंता अपनी बेटी के जीवन और गरिमा की रक्षा करना था, जो उसकी एकमात्र संतान थी। अभिलेख पर साक्ष्य को पढ़कर, यह माना जाता है कि अपीलार्थी केवल मृतक के मन में किसी प्रकार का मनोवैज्ञानिक भय और संयम पैदा करना चाहता था, ताकि वह अब अपीलार्थी की बेटी पर हमला या अपमान न कर सके। घटना के समय घर में केवल अपीलार्थी और मृतक ही मौजूद थे। मृतक द्वारा दैनिक शराब का सेवन एक स्पष्ट कारण था जिसने अपीलार्थी को मृतक पर हमला करने के लिए प्रोत्साहित किया, न कि उसकी हत्या करने के इरादे से, बल्कि केवल मृतक को अपने तरीके सुधारने और अपनी शराब पीने की समस्या को ठीक करने के लिए मजबूर करने के लिए। अपीलार्थी ने अपनी हत्या करने के

इरादे के बिना मृतक पर हमला किया। बल्कि यह मृतक की आदतों को जबरन बदलने और अपीलार्थी की बेटी को शांतिपूर्ण और सम्मानजनक जीवन जीने में मदद करने का एक कच्चा प्रयास था।

17. अपीलार्थी का सबसे अच्छा उद्देश्य मृतक को शराब पीने के बाद अपनी बेटी के साथ दुर्व्यवहार करने से रोकना था। जिस तरह से घटना घर के अंदर हुई प्रतीत होती है, वह 841 है।

मार्कस जाजारा बनाम असम और ए. एन. आर. का राज्य।

यह इंगित करता है कि अपीलार्थी ने लगातार उकसावे के कारण अपना आत्म-नियंत्रण खो दिया और अचानक अपने दामाद को बांस की छड़ी से पीटा। यह एक ऐसा मामला है जहाँ मृतक के अपीलार्थी के घर स्थानांतरित होने के बाद से उकसावा बढ़ता दिख रहा है। अपीलार्थी की बेटी के अपमानजनक रुख की प्रत्येक पुनरावृत्ति के साथ इसने भारी गंभीरता हासिल की। घातक घटना आत्म-नियंत्रण की शक्ति के नुकसान की अंतिम परिणति प्रतीत होती थी। यह तथ्य कि मृतक अपीलार्थी के साथ 'घर जवई' के रूप में रह रहा था, पर्याप्त रूप से इंगित करता है कि अपीलार्थी का अपने दामाद की हत्या करने का कोई पूर्व-नियोजित इरादा नहीं था। लेकिन मृतक द्वारा अपीलार्थी की बेटी के निरंतर उत्पीड़न के लिए, जो एक आदतन शराबी था, अपीलार्थी ने अचानक अपना होश नहीं खोया होगा। एक हताश और असहाय पिता के उबलते असंतोष ने दुर्भाग्य से उसे मृतक को बांस की छड़ी से मारने के लिए प्रेरित किया। मृतक के लिए जिम्मेदार उत्तेजक कृत्यों की श्रृंखला ने वास्तव में निरंतर उकसावे की नींव रखी। 18. वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में, जैसा कि ऊपर देखा गया है, हमें ऐसा प्रतीत होता है कि मृतक को चोट पहुँचाने में अपीलार्थी का कार्य 'गैर इरादतन हत्या' की अभिव्यक्ति के अंतर्गत आता है जो 'हत्या' के बराबर नहीं है। हम उसी के अनुसार चलते हैं। विचारण न्यायालय के साथ-साथ उच्च न्यायालय के आक्षेपित निर्णयों को उस हद तक संशोधित किया जाता है।

19. हमने सजा की मात्रा पर पक्षों के विद्वान वकील की दलीलों पर विचार किया है। हमारी सुविचारित राय में, अपीलार्थी को दी गई आजीवन कारावास की सजा को दस साल के कठोर कारावास में परिवर्तित करके न्याय के उद्देश्यों को पर्याप्त रूप से पूरा किया जाएगा। निम्नलिखित न्यायालयों द्वारा दी गई सजा को तदनुसार संशोधित किया गया है। अपील की आंशिक रूप से अनुज्ञात है। अपीलार्थी को सजा की अपेक्षित और घटाई गई अवधि पूरी होने पर रिहा कर दिया जाएगा, यदि उसकी किसी अन्य मामले में आवश्यकता नहीं है।

20. इसकी अगली कड़ी के रूप में, लंबित अंतर्वर्ती आवेदन, यदि कोई हैं, तो उनका भी निपटारा कर दिया जाता है।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोट:

अपील की आंशिक रूप से अनुज्ञात है।

